राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
बिहार लोक भवन, पटना–800022

संख्या–109/2025

प्रेस–विज्ञप्ति

भारत का सर्वोच्च आध्यात्मिक एवं दार्शनिक आदर्श एकात्मता है–राज्यपाल

पटना 23 दिसम्बर, 2025 :– ''भारत का सर्वोच्च आध्यात्मिक एवं दार्शनिक आदर्श एकात्मता है। जब व्यक्ति के अंतःकरण में एकात्मता का भाव जागृत होता है तब उसे यह अनुभूति होती है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर परमात्मा के रूप में वही आत्मा विद्यमान है जो उसके भीतर है।''–यह बातें माननीय राज्यपाल श्री आरिफ मोहम्मद खां ने बिहार लोक भवन के दरबार हॉल में श्री प्रभाकर सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक ''ट्रांसेडेंटल इकोज : ए स्पिरिचुअल जर्नी ऑफ अ वॉक–इन–सोल' के विमोचन के अवसर पर कही।

उन्होंने कहा कि एकात्मता की इस अवस्था को इसी जीवन में प्राप्त किया जा सकता है। एकात्मता के भाव में रहने के कारण ही हमारे ऋषियों ने अपराधियों के लिए भी अपने दरवाजे खुले रखे और उनमें सुधार के प्रयास करते रहे।

राज्यपाल ने कहा कि हमारा शरीर नश्वर है, परन्तु हमारे भीतर आत्मा के रूप में विद्यमान परमात्मा अविनाशी है। हमारी आध्यात्मिक परंपरा में उसे मानने का नहीं, बल्कि जानने का आवाहन किया गया है। उसे देखने के लिए ज्ञान चक्षु की आवश्यकता होती है।

उन्होंने कहा कि जिस प्रकार हर व्यक्ति में कोई विशेष गुण होता है, उसी प्रकार हर राष्ट्र की अपनी विशेषता होती है। भारत में धर्म का अर्थ आध्यात्मिकता है। हमारे ऋषियों ने प्रारंभ से ही अपने वास्तविक स्वरूप को जानने पर जोर दिया। अपने गुरू से प्रथम मिलन के अवसर पर आदिशंकराचार्य ने अपना परिचय देते हुए अपने आप को शरीर और इससे जुड़े सभी पहचान से परे शिवस्वरूप बताया। भारत में आस्तिक और नास्तिक, दोनों ही आध्यात्मिकता को मानते हैं, भले ही वे ईश्वर को माने या नहीं।

कार्यक्रम को बिहार लोक सेवा आयोग के सदस्य प्रो० अरूण भगत, श्री श्री माँ आनंदमयी संघ के महासचिव श्री श्यामल जी महाराज एवं पुस्तक के लेखक श्री प्रभाकर सिन्हा ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर राज्यपाल के प्रधान सचिव श्री रॉबर्ट एल० चोंग्थू, राज्यपाल सचिवालय के पदाधिकारीगण, विभिन्न स्थानों से आए साधकगण एवं अन्य लोग उपस्थित थे।

.....